श्री रामानन्द यादव : ठीक दिल्ली में हम लोगों के दरवाजे पर लोग रोते हुए आते हैं तबाह हो कर के आते है, हम लोग परेशान हो जाते हैं । मैं आपको बता दूं आप चलिये । मैं आपको डेंस दिखा दूंगा जहां सैंकडों मजदूर रखे हुए हैं **(व्यवधान)**

श्री सभापति : इनको ले जाइये न आप । **(व्यवधान)**

श्री धर्मवीर : सभापति महोदय, एक प्रोक्टर इमीग्रेंट्स आफिसर होता है इन्हीं शिकायतों को दूर करने के लिए। प्रोक्टर जनरल जो है वह श्रम शक्ति भवन में नीचे बैठता है कोई भी किसी वक्त जा कर के शिकायत कर सकता है। वह सप्ताह में तीन दिन सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को बैठता है जो भी शिकायतें आती हैं उन पर आवश्यक कार्यवाही की जाती है । चूंकि अभी 6 महीने ही इस कानून को बने हुए हैं अभी हमारे पास सारे तजरुबे नहीं हुऐ हैं और यदि आवश्यकता पड़ेगी संशोधन करने के लिए तो मैं माननीय सदस्य की भावना का आदर करता हूं । इस प्रकार की शिकायतें आ सकती हैं मानव की जीवन में, सोच समझकर कानून बनाते हैं लेकिन ऐसे भी बहुत से लोग हैं...

श्री सभापति : उनका तजरुबा आपसे ज्यादा होता है ।

श्री धर्मवीर : हम इस बात का प्रयास कर रहें हैं कि इस प्रकार की कोई शिकायतें न आने पावें । लोग जो बाहर जाते हैं उनको आथोराइज्ड एजेंट के माध्यम से जाना चाहिये । कुछ लोग जब अनआथोहाइज्ड एजेंट्स के साथ जाते हैं तब हमारे लिए दिक्कत हो जाती है कि उनको कैसे पकड़ें । जो आथोराइज्ड एजेंट्स हैं उनके द्वारा जो जाते हैं वे हमारी पकड़ में होते हैं विदेश में जहां वे जाते हैं । इस प्रकार मैं चाहूंगा वे उनको राय दिया करें कि आथोराइज्ड एजेंट्स हैं उनके द्वारा वे जाएं क्योंकि उन पर कुछ शर्तें होती हैं हमारे बन्धन होते हैं उन पर नियंत्रण रखा जा सकता है अन्यथा बिना सोचे समझे किसी अनआथोराइज्ड एजेंट के माध्यम से जाएंगे तो हमारा कोई उत्तर-दायित्व नहीं रहता है । **(व्यवधान)**

श्री रामानन्द यादव : कोई व्यवस्था आप करिये... **(व्यवधान)**

Indigenous Production of Drugs

*206. DR. MAHABIR PRASAD:
SHRI ASHWANI KUMAR:†

Will the Minister of CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to state:

(a) how many of the bulk drugs manufactured in the country indigenously are also imported and the quantity and value of the import during the last three years; and

(b) whether Government propose to encourage more production of these drugs indigenously and if so, what steps have been taken in this regard?

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI VASANT SATHE): (a) My Ministry monitors the production of 86 bulk drugs in the organised sector. Of these 86 bulk drugs, in 1982-83, import of 36 bulk drugs was nil/negligible and import of 16 other bulk drugs was less than 10 per cent of the total availability in the country. A list of these 52 bulk drugs is given in the enclosed Statement-I (*See* below). Import of other

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Ashwani Kumar.

monitored bulk drugs has been more than 10 per cent of the total availability, due to various reasons such as gap between domestic demand and installed capacity, cheaper imoprts, production problems, availability of appropriate technology etc. A list of these bulk drugs is given in the enclosed Statement-II. The details of imports are published in the Monthly Statistics for Foreign Trade in India, Volume-II, copies of which are available in the Parliament Library.

(b) In order to step up the production of drugs, Government have been approving additional capacities and foreign collaborations, based on the merits of each case.

Statement-I

List of Bulk Drugs whose imports had been NIL less than 10 per cent of total availability during 1982-83

1. Pencillin
2. Streptomycin
3. Chloramphenicol Powder
4. Chloramphenicol Palmitate
5. Erythromycin
6. Sulphamethoxazole
7. Sulphadimidine
8. Sulphaacetamide/Sodium
9. Sulphamethizole
10. Phthalyl Sulphathiazole
11. Sulphamoxole
12. Sulphaphenazole
13. Sulphaguanidine
14. Sulphasomidine
15. Sulphanilamide
16. Vitamin C
17. Vitamin P
18. Folic Acid
19. Nicotinic Acid
20. Nicotinamide
21. Analgin
22. Aspirin
23. Phenyl Butazone
24. Oxyphenyl Butazone
25. Paracetamol
26. INH
27. PAS
28. Thiacetazone
29. Amodiaquin
30. Iodo-Chlorohydroxy quinoline
31. Di-iodohydroxy quinoline
32. Intestopan
33. Metronidazole
34. Diloxanide Furoate
35. Chlorpropamide
36. Tolbutomide
37. Glybenclamide
38. Insulin
39. Terbutaline
40. Xanthinol Nicotinate
41. Lignocaine
42. Phenramine Maleate
43. Diphenhydramine
44. Mebendazole
45. Diazepam
46. DEC Citrate
47. Clofazmine
48. Triple Vaccine
49. Tetanus Anti Toxin
50. Diphtheria Anti-toxin
51. Trimethoprim
52. Vitamin E

Statement-II

List of Bulk Drugs whose imports during 1982-83 had been more than 10 per cent of the total availability

1. Tetracycline
2. Oxytetracycline
3. Ampicillin
4. Amoxycilline
5. Doxycycline
6. Gentamycin
7. Sulphadiazine
8. Vitamin A

9. Vitamin B1
10. Vitamin B2
11. Vitamin B12.
12. Vitamin D3
13. Vitamin K
14. Pethidine
15. Ibuprofen
16. Dexamethasone
17. Betamethasone
18. Prednisolone
19. Chloroquin
20. Tinidazole
21. Caffeine
22. Niketham ide
23. Frusemide
24. Ephedrine
25. Salbutamol
26. Propranolol
27. Digoxin
28. Methyl Dopa
29. Procaine
30. Chlorpheniramine Maleate
31. Piperazine and its Salts
32. Phenobarbitone
33. DDS (Dapsone)
34. Ethambutol

श्री अश्विनी कुमार : सभापति महोदय, प्रश्न के उत्तर में थोड़ा सा तालमेल नहीं है वह मैं आपके माध्यम से आपके सामने रखना चाहता हूं । प्रश्न पूछा गया है :

"How many of the bulk drugs manufactured in the country indigenously are also imported and the quantity and value of the import during the last three years?"

मंत्री जी ने न क्वांटिटी दी है और न उसका दाम दिया है । प्रतिशत दे कर के निकल गये है, परसेंटेज दे दिया है । इसके लिये मैं आपके माध्यम से यह चाहता हूं कि मंत्री जी प्रश्न का ऊतर विधिवत दिया करें । प्रतिशत देने से कुछ समझ में हमारे जैसे साधारण व्यक्तियों को नहीं आता इसलिये पहले मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं । मैं चाहूंगा कि मंत्री जी इस प्रकार से सूचना न दें । दूसरा जो मेरा प्रश्न है, पहली जो लिस्ट उन्होंने दी है कि इनमें दवाइयां हैं 52 ऐसी हैं जो कि 10 परसेंट से कम हम इम्पोर्ट कर रहे हैं । मैं उनके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं करना चाहूंगा परन्तु मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि हमने तीन वर्ष की जानकारी मांगी थी उन्होंने 1982-83 की दी है वह भी प्रतिशत में दी है । मैं यह कहना चाहूंगा कि यह ऐसी चीज है जो मेरी समझ में नहीं आ रही है ।

A list of bulk drugs whose imports during 1982-83 have been more than 10 per cent of the total availability. More than 10 per cent means it can be up to 99 per cent or 100 per cent or 200 per cent.

मैं मंत्री महोदय से यह स्पष्ट जानना चाहूंगा कि इन 34 दवाइयों में से कौन सी हैं जो 10 से लेकर 25 परसेंट है, कौन सी हैं जो 50 परसेंट से ज्यादा हैं, कौन सी हैं जो 100 परसेंट से भी ज्यादा हैं ।

श्री वसन्त साठे : सभापति जी, जो वेल्यू की आपने बात की जरा नोट कर लीजिये आपकी जानकारी के लिये, 1980-81 टोटल 112.54 करोड़ रुपये, 81-82 136.33 करोड रुपये, 82-83 में 146.32 करोड़ रुपये, 83-84 में 162.60 करोड रुपये । तो यह 3-4 साल की टोटल वैल्यू हो गयी । अब जो दूसरा सवाल आपने पूछा 10 परसेंट से ज्यादा जिनकी इम्पोर्ट है । तो वह परसेंटेज वैरी तो होती है । अब हर एक का डिटेल देना बहुत लम्बी लिस्ट होती है लेकिन आपकी जानकारी के लिये ...

श्री सभापति : एक दो सुना दें ।

श्री वसन्त साठे : सौ परसेंट से ज्यादा कोई नहीं है । वैरी होता है 10 परसेंट से 40 परसेंट । यह अंदाज में है । जैसे विटामिन बी 12 है और कुछ आइटम मिथाइल डाबो, कटैगरी 4 में, 75 परसेंट से कुछ ज्यादा है । वह है और इसी तरह 1, 2, 3, 4 नाम हैं मैं आपको डिटेल जानकारी भेज दूंगा क्योंकि यह बहुत लम्बी चौड़ी बात हो जायेगी ।

श्री अश्विनी कुमार : अब जब फिगर्स सामने आई हैं तो मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से कहना चाहूंगा कि आंकडे बराबर बढ़ते चले जा रहे हैं । दाम 112 करोड़ से 84 आते आते 162 करोड़ हो गया , प्रतिशत कुछ रहा होगा तो भी इम्पोर्ट का वैल्यू बढ़ रहा है, यह देश की प्रगति की दृष्टि से चिंता का विषय है और जब हमने पूछा है कि बल्कि ड्रग्स देश में बने, इसके लिये आप क्या कदम उठाने जा रहे हैं तो इसमें तो उत्तर दिया गया है मैं उसमें मंत्री जी ने कहा :

"Government have been approving additional capacities and foreign collaboration based on the merits of each case."

एक बड़ा जनरल है । मैं जरा स्पेसिफिक जानना चाहूंगा और इतनी इनकी मेहनत के बावजूद इम्पोर्ट का बिल बढ़ता चला जा रहा है ।

श्री सभापति : बिल बढ़ने की कई बातें होंगी, दवाओं की कीमत डबल हो गयी तो बिल डबल हो जायेगा ।

श्री अश्विनी कुमार : हम भी यह चाहते है कि आई० डी० पी० एल० या अन्य देश में ज्यादा दवाइयां बनायें इम्पोर्ट बिल न बढ़े तो इसके लिये क्या क्या स्पेसिफिक कदम उठाना चाहते हैं, मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं ।

श्री वसन्त साठे : हमारी तो कोशिश यही है कि . . .

श्री सभापति : सभी दवाइयां यहां बने ।

श्री वसन्त साठे : सभी दवाइयां यहां बनें और हमने किसी पर रोक नही लगाई है दवाइयां यहां बनाने के मामले में, हम उनको पूरा प्रोत्साहन देते है और खास करके हिन्दुस्तानी सेक्टर जो है उसको ज्यादा प्रोत्साहन देते हैं, किसी पर रोक नहीं है । स्माल स्केल पर तो जरा भी रोक नहीं है कितनी भी कैपेसिटी लगायें कुछ भी प्रोड्यूस करें, बशर्ते क्वालिटी रखें । उसमें आप भी सहमत होंगें कि क्वालिटी के मामले में ढ़ील नही देनी चाहिये वरना हम दवाइयां बनाने के लिये पूरा प्रोत्साहन दे रहे हैं । दवाइयां हिन्दुस्तान में नहीं बनती हैं या आवश्यक दवाएं, क्वांटिटी बड़ी छोटी है, हालांकि दाम बढ़े हों लेकिन इक्नामिकली
it is not viable to produce.
तो उनको हमें लाने के लिये इजाजत देनी पड़ती है ।

श्री चतुरानन मिश्र : सभापति महोदय, मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि क्या इसलिये भी इम्पोर्ट ज्यादा बढ़ रहा है कि आई० डी० पी० एल० जो पब्लिक सेक्टर में है वह क्षमता से, 50 परसेंट से कम में काम कर रहा है ? अगर यह कारण है तो आई० डी० पी० एल० की क्षमता के मुताबिक काम करने के लिये सरकार ने क्या प्रबध किये हैं ?

श्री वसन्त साठे : पूरी तरह से तो यह कारण नहीं है लेकिन यह बात सच है

कि आई० डी० पी० एल० की आईडल कैपेसिटी करीबन 49 परसेंट है। 50-51 परसेंट कैपेसिटी यूटिलाइजेशन, एवरेज, टोटल है। वह बढ़ना चाहिये और वह यदि बढ़ता है तो कुछ दवाइयों के मामलें में।

श्री चतुरानन मिश्र : वही तो मैंने पूछा।

श्री वसन्त साठे : वही तो मैं कह रहा हूं। वह प्रयास हमारा चल रहा है। असली झगड़ा कास्ट आफ प्रोडक्शन का है। अपने देश में आई० डी० पी० एल० या दूसरे सेक्टर है। जब इनपुट की कास्ट बढती है तब कास्ट आफ प्रोडक्शन ज्यादा होता है कम्पेयर्ड टु द इम्पोर्टेड मेडिसिन्स और बल्क के लिये वहां दिक्कत पैदा होती है प्रोड्यूस करने में। लेकिन मैं आपसे सहमत हूं कि आई० डी० पी० एल० को इसमें कैपेसिटी बढ़ानी चाहिये।

श्री चतुरानन मिश्र : क्षमता से कम काम करने से कास्ट आफ प्रोडक्शन ज्यादा होगा ही, इसलिए अगर क्षमता के अनुसार काम किया जाए तो कास्ट आफ् प्रोडक्शन घट जायेगा। इसलिए उसके लिए आप क्या प्रयास कर रहे हैं, जो कि पहले आपने नहीं किया ?

श्री वसन्त साठे : हमने जो प्रयास किया उससे आई० डी० पी० एल० का प्रोडक्शन बढ़ रहा है और उनका लास भी घट रहा है दिन-ब-दिन और हमारा विश्वास है कि आई०डी०पी०एल० का प्रोडक्शन ज्यादा अच्छा बनेगा।

MR. CHAIRMAN: Next question.

DR. JOSEPH LEON D'SOUZA: Mr. Chairman, Sir, ...

MR. CHAIRMAN: I did not see you, doctor. I searched for you, Dr. D'Souza. How did you escape my notice? Question No. 207.

Complaints regarding over billing by Telephone Department in Calcutta, Bombay and Madras

*207. SHRI SUSHIL CHAND MOHUNTA:

SHRI BISWA GOSWAMI:†

Will the Minister of COMMUNICATIONS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that complaints of over billing by the Telephone Department in Calcutta, Bombay and Madras have been on the increase;

(b) if so, what is the number of complaints received in these cities for the last one year; and

(c) what steps have been taken by Government to remedy the situation?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMUNICATIONS (SHRI VIJAYA N. PATIL): (a) While the percentage of excess billing complaints to the number of bills issued continues to be less than 1 per cent, there has been an increase in the number of excess billing complaints during 1983-84 in Bombay, Madras and Calcutta.

(b) The number of complaints received in Bombay, Madras and Calcutta during 1983-84 is as under:

Bombay	..	11,235
Madras	..	4464
Calcutta	..	8,530

(c) A statement is laid on the Table of the House. (*See below*)

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Biswa Goswami.